उषा
शमशेर बहादुर सिंह

पद्यांश पर आधारित

संकेत - प्रात नभ था ------- हो रहा है।

1- कविता किस काल की है?
(क) आधुनिक काल (ख) भक्तिकाल
(ग) रीतिकाल (घ) - भारतेन्दु युग

(2) नीले आकाश में सूर्य कैसा लगता है?
(क) सूखे चौके जैसा (ख) नीले शंख जैसा
(ग) खड़िया चाक जैसा (घ) - गीले चौके जैसा

(3) - 'शंख जैसे' में कौन सा अलंकार है?
(क) उत्प्रेक्षा अलंकार (ख) रूपक अलंकार
(ग) उपमा अलंकार (घ) - अनुप्रास अलंकार

(4) सूर्योदय का अर्थ है -
(क) सूर्यग्रहण होना (ख) सूर्य का उदय होना
(ग) सूर्य का अस्त होना (घ) - इनमें से कोई नहीं

(5) - कविता में प्रयुक्त बिंब का नाम बताइए -
(क) स्पर्श बिंब (ख) दृश्य बिंब
(ग) उपर्युक्त दोनों (घ) - इनमें से कोई नहीं

प्र- उषा कविता का प्रतिपाद्य लिखिए -
उत्तर- प्रतिपाद्य - कवि कहता है कि सूर्योदय से पहले आकाश का रंग गहरे नीले रंग का होता है तथा वह सफेद शंख जैसा दिखाई देता है। आकाश का रंग ऐसा लगता है

मानो किसी गृहिणी ने राख से चौका लीपा दिया हो। सूर्य के ऊपर उठने पर लाली फैलती है तो ऐसा लगता है जैसे काली सिल को किसी ने धो दिया हो या उस पर लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो। नीले आकाश में सूर्य ऐसा लगता है मानो नील जल में गोरी युवती का शरीर झिलमिला रहा हो। सूर्योदय होते ही उषा का यह जादुई प्रभाव समाप्त हो जाता है।

कविता के साथ –

1- कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का शब्दचित्र है

उत्तर- कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब योजना की है –

(i) राख से लीपा हुआ चौका
(ii) खड़िए से घिसी हुई स्लेट
(iii) नीला शंख
(iv). नीले जल में झिलमिलाती गौर वर्ण स्त्री

ये सारे उपमान उषा के सौंदर्य को प्रातः कालीन गतिविधियों से जोड़ते हैं। इसलिए उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्रण है।

2- भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)

नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्ति में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है?

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से निम्न विशेष अर्थ पैदा हुआ है-

(i)- कवि ने अर्थ में विशेषता लाने के लिए भोर के आकाश

को लीपे हुए चौके के समान बताया है। जिस तरह लीपा हुआ चौका नमी से युक्त होता है, इसी प्रकार भोर का आकाश भी ओस के कारण नम होता है।
(2)- राख से लीपा हुआ चौका पवित्रता और शुद्धता का प्रतीक होता है, इसी प्रकार भोर का समय भी पवित्र और शुद्ध माना जाता है।

शिल्प सौंदर्य पर आधारित—

भाषा— सरल, खड़ी-बोली का प्रयोग देशज शब्द जैसे लीपा हुआ, खड़िया, चौका आदि का प्रयोग।

छंद- मुक्त छंद

रस- श्रृंगार रस

अलंकार— प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे] उपमा
राख से लीपा हुआ चौका] अलंकार

बहुत काली सिल जरा से लाल केसर —] उत्प्रेक्षा अलंकार
कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक] उत्प्रेक्षा अलंकार
मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की] उत्प्रेक्षा अलंकार
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो